

“तोल-मोल के बोल”

चंदा यादव^ॐ

किसी ने ठीक ही कहा है कि -

“जीभ पर लगी चोट ठीक हो जाती है,
लेकिन जीभ से लगी चोट ठीक नहीं होती”

इससे सीधा तात्पर्य है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने द्वारा कहे गए शब्दों के भावों की कीमत पता होनी चाहिए, क्योंकि शब्द भले ही आसानी से सामान्य अवस्था में कह दिए जाते हैं, परन्तु उनके भाव व प्रभाव लंबे समय तक अपना असर रखते हैं।

इसलिए यह कहना बलत नहीं होगा कि “जीवन सौंदर्य है, जिसका शृंगार शब्द है” यदि हम शृंगार का प्रयोग सही जगह सही तरीके से करना जानते हैं तो आसानी से अपने जीवन के सौंदर्य को बढ़ा सकते हैं। साथ ही यह भी सत्य है कि आपकी वाणी से निकले हुए शब्द ही आपके भविष्य का रास्ता बनते हैं, यदि आप किसी को कड़वे वचन बोलोगे तो शायद ही ऐसा कोई सहनशील व्यक्ति होगा जो इसके उत्तर में आपको मीठे शब्द भेंट करे।

आपके द्वारा बिना तोल-मोल के कहे गए शब्द सकारात्मक व नकारात्मक दोनों हो सकते हैं। सकारात्मक विचार को सामने वाला व्यक्ति अपने जीवन में लागू करता है तथा धीरे-धीरे शब्दों के भाव से प्रभावित होता है। परन्तु किसी के द्वारा कहे गए नकारात्मक शब्द आपके मन, मस्तिष्क में ऐसे भाव पैदा करते हैं कि आप न चाहते हुए भी उस शब्द को याद रखते हैं और उस व्यक्ति को भी। यानी व्यक्ति द्वारा कहे गए शब्द हमें ज्यादा प्रभावित करते हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने शब्दों की कीमत व उनके भावों का अंदाजा लगाकर तथा उन्हें तोल-मोल कर ही प्रयोग करना चाहिए। क्योंकि एक निश्चल प्राणी जो अपने शब्दों को सहजता से व तोल-मोल के प्रयोग करता है, वह अपने बोल से विरोधियों को भी स्पर्श कर सकता है।

आप भले ही कुछ शब्द बिना विचार किए और उसका परिणाम सोचे बोले दे पर श्रोता आपके शब्दों को सुनता भी है, समझता भी है और इससे आपके शब्दों का व्यक्ति के जीवन पर गहरा असर भी पड़ता है, जिसे आप चाहकर भी परिवर्तित नहीं कर सकते, बल्कि आपके द्वारा कहे गए शब्दों के भाव समय के साथ गहरे होते चले जाते हैं। इसलिए बुद्धिमत्ता इसी में है कि पहले अपने शब्दों को चुने, उनको टटोले फिर तोल-मोल के उनका प्रयोग करें।

प्रत्येक व्यक्ति हमेशा अच्छा व्यवहार करेगा ऐसा नहीं है, यह बात भी स्वीकार करनी चाहिए। अपने शब्दों की कीमत समझना और उनका तोल-मोल कर प्रयोग करना ही व्यक्ति का गौरव है जो उसे दूसरों से अलग बनाता है। ऐसे व्यक्ति संयमशील और दूरदर्शी होते हैं और उनमें सोचने व समझने की दृढ़ शक्ति होती है। साथ ही इनके शब्द सकारात्मक रूप से लोगों को प्रभावित करते हैं और उनके जीवन में प्रेरणा बनते हैं। ऐसे लोगों से मिलकर सकारात्मक विचार आते हैं, जिससे लोग अपने जीवन में भी परिवर्तन को आसानी से अपना पाते हैं।

* सहायक प्रोफेसर, एनसीडब्ल्यूईबी, दिल्ली विश्वविद्यालय।

शब्दों से ही व्यक्ति की सुंदरता का ज्ञान होता है। शब्द ही व्यक्ति का व्यक्तित्व बताते हैं और शब्द ही व्यक्ति का वजूद बनाते हैं। हम जीवन में कभी उन व्यक्तियों की परवाह नहीं करते जो बिना सोचे-समझे अपने शब्दों के भावों को व्यर्थ करते हैं और इनकी अहमियत नहीं समझते, बल्कि हम जीवन में उन व्यक्तियों को सुनना पसंद करते हैं जिनमें संयम, साहस, संतुष्टि व अपने शब्दों के प्रति संवेदनशीलता होती है। ऐसे व्यक्ति के शब्द आसपास के लोगों के लिए एक दिशा बनते हैं। इसलिए अपने कीमती शब्दों को व्यर्थ न करें बल्कि उन्हें एक पथ प्रदान करें जिसमें उनका महत्व हो और आपके शब्दों को सुना जाए, समझा जाए, आत्मसात किया जाए। क्योंकि मानव जीवन में शब्द ही वह महत्वपूर्ण अस्त्र है, जिसका प्रयोग कर व्यक्ति एक-दूसरे से संचार स्थापित करते हैं, एक-दूसरे के हाव-भाव को व भावनाओं को समझते हैं।

हम समाज में कुछ ऐसे प्रभावशाली व्यक्तियों को देख सकते हैं, जिन्होंने सकारात्मक व प्रभावी शब्दों से लोगों का जीवन बदला, लोग भले ही उनको भूल गए हों परन्तु उनके द्वारा कहे गए शब्द आज भी मस्तिष्क में कौंधते हुए नवस्फूर्ति का संचार करते हैं।

कई बार किसी व्यक्ति द्वारा कहे गए कुछ शब्द दूसरे व्यक्तियों को इतना प्रभावित कर देते हैं कि उनका जीवन बदल जाता है। क्योंकि उन शब्दों के जुड़ाव से लोगों को ऊर्जा मिलती है, जो उनके जीवन में नए भाव पैदा करती है।

एक बार एक व्यक्ति परेशान होकर अपने एक मित्र के पास गया और दूसरे मित्र की खूब निंदा की। थोड़ी देर बाद उसे अपने द्वारा कहे गए शब्दों का एहसास हुआ। तब वह वापस मित्र के पास गया और क्षमा मांगते हुए बोला, मित्र जो मैंने बोला उसका एहसास है मुझे। मित्र ने मुस्कराते हुए कहा, मेरा एक कार्य करोगे, मुझे कुछ फूलों की आवश्यकता है, ले आओ। वह व्यक्ति ले आया। उसके मित्र ने पुनः कहा की प्रत्येक फूल की पंखुड़ियों को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ दो। उस व्यक्ति ने ऐसा ही किया। फिर मित्र ने कहा मित्र अब मुझे यह नहीं चाहिए। आप इन्हें जोड़ दो और वापस पेड़ पर लगा आओ। व्यक्ति ने आश्चर्यचकित होकर जबाब दिया क्या मजाक है, ऐसा बिल्कुल नहीं हो सकता है। तब उसके मित्र ने कहा - समझदारी और बेवकूफी में यही अंतर है। समझदार बोलने से पहले सोचकर बोलता है और बेवकूफ बोलने के बाद सोचता है। अतः जैसे फूलों को फिर से जोड़ना मुमकिन नहीं है, वैसे ही अपने द्वारा कहे गए शब्दों को वापस लेना भी मुमकिन नहीं है, चाहे बाद में उस पर आपको कितना भी पछतावा हो। इसलिए आपकी समझदारी इसी में है कि आप पहले ही अपने शब्दों का प्रयोग तोल-मोल कर करें।

अतः सही भावों से कहे गए शब्दों की गरिमा हमेशा बनी रहती है, वहीं आपके द्वारा कहे गए कड़वे, कसैले शब्द लोगों की महत्वाकांक्षा को मार देती है, उनका जीवन शून्य की तरफ जाने लगता है और ऐसे शब्द इंसान कभी नहीं भूलता। बोलने का व्यवहार व कला साथ ही तोल-मोल कर बोलना व्यक्ति के व्यवहार की एक कुशलता है और इसका ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को होना चाहिए क्योंकि इससे उसका नजरिया झलकता है।
